

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

विक्रमी संवत् १९८७

मक-०७०८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शारदा पञ्चाङ्गम्

सप्तर्षि संवत् ५०६८

प्रधान मंत्री

वर्षका राजा

चन्द्रमा ॥

शुक्र:-

विक्रमी → २०४९

राष्ट्रपति शशि ॥

वर्षाभिगवती - क्षत्राणी ॥

शाका → १९९४

ईस्वी → १९९२-९३

गणित कर्ता:-

संशोधक:-

ज्यो. खेंकारनाथ (ज्यो. विश्वासद)

ज्यो. काशीनाथ हण्ड
कर्म काण्ड शिरोमणि:-

बहोरी कदल श्रीनगर

काश्मीर।

संपादक एवं प्रकाशक:-

रजि. नं० ॥

ब्राह्मण महामण्डल-काश्मीर (श्रीनगर)
जम्मू ॥

११५

[illegible]

[illegible]

मंवा ५-०३ विहारी प्र-२० वै वरि १९७८ मे भि के निम्नी ठां मंम कु च नी मु म क १०५१४०२९
नं ०३।६० मिपू हे।०९ लयने-१९।२-१९ दिव्यामी ०८०९

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਸੁਖ ਨਿਰਮਲਾਯਮਾ

[illegible]

ॐ

विं श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो विप्रदेव्यु ॥

मं वं ५०६ विरूनी ७०८७ मठः

०७०८ उं श्री ०७७७-७७७ मठः

५००० पूकन मठं ॥ ॥

मठ यमपवीतभुज ॥

मैत्रमुद्रि

३ मथेल वं धृष्टं नि १५० म

७१८८ उक व लप्र ॥ वैवदि

७० मथेल मठ दृष्टीय नि १-

०० मे ७१० उक व लप्रममः ॥

वैमुद्रि

मभौ मठ द्वितीय नि ०३५७ मे

७११ उक भि लप्र ममः ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

५० मे ३१० उक क लप्र ममः

नि ३०५ मे ००१७ उक भि लप्र ।

मुद्रि नमुद्रिः -

१ मठ यमपवीतभुज

नि १५० मे ७१५ उक भि लप्र

नि ००५७ मे ०७१०५ उक वं ममः

मठ यमपवीतभुज

०७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

५० मे ३१० उक क लप्र ममः

नि ३०५ मे ००१७ उक भि लप्र ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

५० मे ३१० उक क लप्र ममः

नि ३०५ मे ००१७ उक भि लप्र ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

नि ०७१७ मे ७१०० उक व लप्रममः ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

५० मे ३१० उक क लप्र ममः

नि ३०५ मे ००१७ उक भि लप्र ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

५० मे ३१० उक क लप्र ममः

नि ३०५ मे ००१७ उक भि लप्र ।

मठ यमपवीतभुज

७७७ लगे लीव मठं नि ५-

५७ मे ३१०० उक क लप्र ।

नि ३७७ मे ००१ उक भि लप्र

०७७ लगे वि श्रेष्ठं नि ५-

३८ सुहृन्मयीं नि ५१५ मे ३।८०
उक वलनप्र। गि ०००५ मे ०।९३३
पं लप्र।

३९ वेरु सुहृन्मयीं नि ३।३९ मे ५।५०
उक कं लप्र।

०० सुहृन्मयीं नि ५।३० मे ३।०९
वलनप्र। नि ५।३९ मे ०।९३३ उक
मिलनप्रमः॥

वे मुद्रि:-

०० सुहृन्मयीं नि ३।०९ मे ५।३० कं
गि ३।३० मे ८।८० भीतं भः

०० वेरु सुहृन्मयीं नि १।१९ मे ०।१०० उक
मिलं भः।

सुहृन्मयीं

०० सुहृन्मयीं नि ३-
३- मे ०।१८ मिलनप्रमः॥

सुहृन्मयीं

३- सुहृन्मयीं नि १।१८ मे
०।१० उक मिलनप्र। गि ०।१९ मे
००।०९ भीतं भः।

३३ सुहृन्मयीं वेरु सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१०
मिलनप्र॥

३४ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
कं लप्र।

गि १।१८ मे ००।०९ भीतं भः
३५ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ००।०९
कं लप्र।

गि १।१८ मे ००।०९ भीतं भः
३६ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
मिलं भः।

सुहृन्मयीं

३७ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
कं लप्र भः।

गि १।१८ मे ०।१० भीतं भः
३८ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
कं लप्र।

गि ००।३० मे ०।१० उक भः
३९ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
कं लप्र।

०।१८ उक उलनप्र भः।
१।१८ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ००।०९ उक
कं लप्र।

१।१८ सुहृन्मयीं नि १।१८ मे ०।१० उक
भीतं भः।

सुहृन्मयीं:-

०० सुहृन्मयीं नि १।१८ मे

०१ उक वलनप्र भः।

गि १।१८ मे ०।१८ वलनप्र भः
कं लप्र:-

३३ सुहृन्मयीं नि

३।०९ मे ००।०९ वं

गि ३।०९ मे ०।३ वलनप्र भः

कं लप्र:-

०० सुहृन्मयीं नि ३।०९ मे ०।१८ उक
वलनप्र। नि ०।१८ मे ३।३९

उक वलनप्र भः।

गि ३।०९ मे ३।३ वलनप्र

०० सुहृन्मयीं नि ३।०९

मे ३।३ कं लप्र गि १।१८ मे

३।०९ उक वलनप्र भः॥

भतवदि

०३ नवं सुहृन्मयीं नि ०।१८ मे

३।०९ कं लप्र भः। गि ०।३

३।८ उक मिलनप्र

०३ नवं सुहृन्मयीं नि ०।१८ मे

३।०९ कं लप्र भः।

उच्चरी वीरकपट्टं
दण्डि
उच्चरी सुत्तपंथी
पमह सुत्तपंथं

भानवदि:-
०१ नवरीवे द्वितीयं
गि ०१३ मे ०१८ मे नत्र
गि ११० मे २१३ भी नत्र
०१ नव सुत्त द्वितीयं
गि ०१३ मे ०१८ मे नत्र
गि ११० मे २१३ भी नत्र
भानवदि:-

पलगाय के सपुष्टं गि ११० मे ००१०
कं लत्र भनः।
१ लग सुत्त नवयं गि ११५ मे ००१०
कं लत्र।

लघमसुत्तपिष्टः

सैरमुदि:-
०१ लघम सुत्त पंथं
गि ११३ मे ११० उक
व नत्र भनः।
गि ११३ मे ००१३ उक
मि नत्र
०१ लघम सुत्त पं
गि ११३ मे ११० उक
व नत्र

३ नव सुत्त पंथं गि ०१५
मे ३१३ भी नत्र
म दिभं सुत्त पंथं गि
०१८ मे ३१५ उक भी नत्र भनः
१ दिभं सुत्त पंथं गि ०१० मे
३१३ उक भी नत्र भनः।

भानवदि:-
१५ सुत्त द्वितीयं गि ००१० मे
०१ उ उक भन लत्र भनः।
११ सुत्त वीरकपट्टी गि ०१३ मे ११०
व नत्र।
१३ सुत्त वीरकपट्टी गि ०१३ मे
११० उक व नत्र।
११ सुत्त पंथं गि ०१३ मे
११० उक व नत्र

देवदि
०३ लघम सुत्त पंथं
गि ११० मे ००१३ भितं
१ लघम सुत्त द्वितीयं
गि ११० मे ११३ व नत्र
वैमुदि
०१ सुत्त द्वितीयं
गि ११० मे ११३

उच्चपमिभ भाषाणि:
म्वदि
०१ सुत्त सुत्त द्वितीयं
गि ११० मे ०१३ भितं भनः
गि ०१३ मे ११० उक उं नत्र
म्वदि ॥
१ लघम सुत्त पंथं गि ११०
मे ००१३ कं लत्र भनः

दमुदि:-
०१ सुत्त सुत्त पंथं गि ०१३ मे ०१३
व नत्र
१ लघम सुत्त पंथं गि ११३ मे
११० भ नत्र।
गि ०१३ मे ००१५ व नत्र भनः।
उदि भन पंथं ॥
मंमंमः मी कभी नव फंके (५ लघम) ॥



२२ नवंबर २४ ४३ को बुबलीका विवाह

१५
पूजा, सत्यमुरि
पूजा घर
आंटी घर

५
बाच्छा घर
डिज्यु घर
निधिलिस
पूजा
आंटी
बान्नीका